भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-16, अंक-9 रविवार, 26 सितं.' 93	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी सितम्बर, 1993	वार्षिक चन्दा-30.00 प्रति अंक : 3.00

अमृतसेतु

[हम सब के प्यारे प्रभु प.पू. काकाजी का अमृत महोत्सव (75वीं जन्म जयंती) का महामंगलकारी वर्ष–'1993' चल रहा है.... हमारे भाग्य का तो पार नहीं कि रोम-रोम में भगवान प्रकटाये परम पवित्र पुरुष गरजू बनकर हमारे जीवन में आ गये....हमें अपनी गोद दी और उनके संग जीवन जीये !!...कैसे ऋण चुका भी पायेंगे इनका?

पू. काकाजी के निम्नलिखित दो आंशिक पत्रों से ही स्पष्ट होता है कि हमें कैसी भव्य प्राप्ति हुई है....और इनके संबंध में आने के बाद हमें क्या करना है? और इससे भी अधिक–कैसी कल्पना से परे की प्रीति होगी हम सबसे उनकी? कितना अपना माना होगा हमें–जो ऐसा सचोट व स्पष्ट मार्गदर्शन हमारे लिए खुला रख दिया कि आज भी यदि करने लग जायें तो परम सुखी हो जायें व देह रहते हुए अक्षरधाम का सुख-शांति, आनंद प्राप्त करें.....

आईये, हम सब मिलकर इस रहस्य का मनन चिंतन करके समझने का प्रयास करें। इन वाक्यों को अपने जीवन का आधार बना लें ताकि 'अमृत महोत्सव' तक में प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों हमारी सब कसर टाल कर हमारी साधना की पूर्णाहुति करा देवें....यही अंतर की आरजु.....]

▭ .....मुझे तो
पू.बापा ने अनुपम ही पसंदगी में चुना था,
सो,
सर्वांगी विकास में और सर्वोच्च ब्रह्मीस्थिति में
तकलीफें बाधारूप नहीं बनी
और
मूल रहस्यों गौण नहीं हुए–
अक्षरपुरुषोत्तम उपासना
व
जीव को ब्रह्मरूप करके परब्रह्म में जोड़ने के मूल उद्देश्य में सहज स्थिति व सिद्धि पू. बापा ने दे दी.....
जिससे
सभी भूमिकाओं में अखंड शांति और आनंद रहा....

स्वीट्जरलैंड, 15-7-'77

▭ ▭ ▭

❑ **गुरु** बहुत होते हैं,
परन्तु
❑❑ **सद्गुरु** कम।
और
सच्चा सद्गुरु तो शायद ही मिले
और
मिल भी जाये तो–
उसके जोग में रहना कठिन।
यदि रहें भी, तो–
अखंड दिव्यभाव रखना कठिन।
वह भी रखें तो–
स्वभाव टाल कर टिकना कठिन।
वह भी कर लें तो–
उसकी अनुवृत्ति में रहना कठिन।
वह भी हो जाये, तो–
उसके अभिप्राय की भक्ति करनी कठिन।
और
वह भी हो, पर–
भिन्न-भिन्न प्रकार के–भिन्न रुचि वाले मुक्तों के साथ
दिव्यभाव ही रखकर–साधुता रखकर
सरलता वर्तना–सर्वोत्तम स्थिति है।
और तब–
पूर्णता ही प्रगटे
और
Final stage सिद्ध हुई मानी जाये।
तो,
यह **एकता व समता** दृढ़ करते जाना।
दूसरा क्या कर रहा है?
वह
जरा भी नज़र में नहीं लेना।
हमें
प्रभु को याद करके
उन्हें ही सब करने देना है।

शिकागो, 12-5-'-'77

–प.पू. काकाजी महाराज

❑ शब्द द्वारा परमात्मा के स्वरूप के ज्ञान का उपदेश करे वह **गुरु।**
❑❑ सभी में परमात्मा का दर्शन कराये वह **सद्गुरु**।

ब्रह्मप्रवाह

जीवनयात्रा या संग्राम
लौकिक और अलौकिक दृष्टि से—

महाभूतों के विकासक्रम के साथ-साथ महातत्वों का भी प्रगटीकरण हुआ है। अहम् ममत्व की भावनाओं से चैतन्य तथा मन और चित्त के संबंध अनादि काल से ही जुड़े हुए हैं। व्यासजी द्वारा इन्हें वेदों के रूप में—भागवतरूप में और मूर्तिमान संबंध भगवान ने सभी को समझने, दर्शन करने, प्राप्त करने स्वयं का ही आविर्भाव करके देह रहते ही परिपूर्णता प्राप्त कर लेने सरल करा है। ये अलौकिक संबंध, पुरुषार्थ, प्रवृत्ति और प्रतीक सिर्फ वड़वानल अग्निसमान सच्चे सत्पुरुष—प्रगट गुरुरूप हरि द्वारा ही समझकर, पहचाने जाए ऐसे हैं और तभी मानव-जीवन का अनमोल अपूर्व संग्राम—शांति, आनन्द, सुख, बल और सामर्थ्य व कृतकृत्यता देह रहते ही पूर्ण होंगे। जीवन शुद्ध बनकर, वृत्तियाँ निर्मल होकर, वासना कुंठित होकर प्रगट पुरुषोत्तम के स्वरूप में जुड़ जाकर स्वामी सेवकभाव से सत्संग की अखंडित दिव्यता कायम टिकाकर एकांतिकभाव दृढ़ करके, जीवनयात्रा का अविभाज्यभाव—एक धारा से बहता दिव्य झरने का महाधोध पूर्णब्रह्म के साथ पूर्णत्व को पा जाएगा। धाम, धामी, और मुक्तों का निरन्तर ऐक्य दिव्य दृष्टि से जानकर सर्वत्र गुणातीत ज्ञान का—प्रभुता का सच्चा प्रकृतिपुरुष से पर के ज्ञान को फैलाकर, सर्व को परम सुखी कर देगा और तभी जीवनयात्रा का अंत आया कहलाए। जीवनमुक्तों या विदेही मुक्तों स्वतंत्र रूप से, माया से अखंड निर्विकल्पभाव, निर्विकारभाव दृढ़ करके अनेक को गुणातीत करके, एकांतिक बना कर स्वामिश्रीजी में मूल अक्षर के साधर्म्य को पाकर जोड़ेंगे और भगवान का ही सुख देह रहते हुए उसे देंगे।

मानव जीवन के ऐसे प्रवाहों को पुरुषार्थों में से ही यात्रा में स्थूल प्रतीकों के रूप में हे पथिक ! तू ताजमहल, कुतुबमीनार, राजमहल, लालकिला और असंख्य शिलालेखों—प्रसिद्ध पुराने खंडरों को देखना व उनके पीछे भीतर में रही मानव की अमरगाथा—जीवन को अखंड टिकाकर रखने की महा व्याकुलता निहारना। मूल प्रतीकों के मौन, गीतों शांत चित्त से तू सुनना और स्थूल प्रतीकों का मूल्यांकन—उनके पीछे रही भावना—प्रणालिका, त्याग या सामर्थि के आदर्श को कालचक्र की संस्कृति की घड़ियाल की सुईयों से नापना और नोटबुक में अनुभवज्ञान महतजीवन के लिए उपयोगी हो पड़े व स्वाधीनता से प्राप्त हो सके इसलिए अखंड स्मृतिरूप से नोट कर लेना और अन्तर में गहराई तक भर लेना। ऐसी स्मृतियों के संस्मरण तुम्हारे जीवन के अखंड दिव्य स्रोत ही बनकर रहेंगे और फूलों के समान सुन्दरता के तत्त्वों से प्रफुल्लित बना कर छोड़ेंगे।

ऐसी ही कोशिशें मानसिक क्षेत्र में हुई है और

विज्ञान के रूप में अनेक खोजें, अजीब नवीनताएँ–हवाईजहाज, टेलीविजन तथा आकाश की अनन्त उड़नतश्तरियों की गतियाँ और सागर की तथा पृथ्वी की गहराईयों को मूर्तिमान बना कर काले माथे वाले मनुष्य के द्वारा भगवान ने सबको ही आश्चर्यचकित कर दिया है–सन्न कर दिया है और तब भी ऐसा समग्र ज्ञान–आईनस्टाईन–मेकीनटोश वगैरे जैसे महाखोज के अन्त में अपने अनुभवरूप में जैसे कहते हैं कि यह शुरुआत की गिनती का 'एक' की तरह थोड़ी-सी झाँकी रुप ही है। और सापेक्षवाद से भी पर सनातन तत्त्वों की महालीला देखनी वह तो इंद्रियों की व अन्तःकरण की शक्तियों से बाहर की ही बात है। इस बात को अब हरेक मानते हो गए हैं वही आध्यात्मिक क्षेत्र की सर्वोपरिता भौतिकक्षेत्र के मुकाबले अनन्तगुणा बढ़ जाती है यह प्रमाणित करता है।

आध्यात्मिक क्षेत्र की विचार, विवेक, संयम व शुद्ध उपासना की भूमिका पर ऐरिस्टोटल, प्लेटो, नीत्से, शोपनहोयर, टैगोर, विवेकानन्द, रामतीर्थ, क्राईस्ट, मोहम्मद पैगम्बर, गौतमबुद्ध, महावीरस्वामी और कई अवतारों, विभूतियों तथा आखिरकार अवतारों के अवतारी, कारणों के भी कारण ऐसे सर्वोपरि भगवान सहजानन्द स्वामी ने उनके अनन्य भक्तों–मुक्तों व मूर्तिमान अक्षरधाम सहित पधार कर केवल करुणा से ही मानव जीवन को दिव्य जीवन की सम्पत्ति सुख, आनन्द और शांति बक्षिश में दिए हैं और संतों के रूप में भरतखंड में वच.वड. 19, वड. 10-11 के मुताबिक साक्षात् स्वरूप द्वारा कल्याण का, मंगल का, आत्मा-परमात्मा के साक्षात्कार का, कारण शरीर टालने का, ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म पुरुषोत्तम में देह रहते हुए ही जुड़ने का अक्षरधाम का अलौकिक मार्ग खुल्ला कर दिया व स्थावर जंगम तीर्थों की स्थापना करके मानव जीवन को महासमृद्ध बना दिया। ऐसी आध्यात्मिक जीवनयात्रा संतों के–अवतारों के लीलाचरित्रों गाते सुनते समझ में आ जाएगी और पथिकों को यात्रा का अनन्य अपूर्व आनन्द व सुख प्राप्त होगा। साक्षात संत ही मूर्ति, तीर्थ व शास्त्र करता है और उसमें प्राण डालकर जीवंत रखता है। धर्म का लय होने पर एकांतिक धर्म एकांतिक साधु संत के चरणों में ही रहता है। सो, सबसे अधिक जंगमतीर्थ ही सर्वोपरि है। वच. प्र.54 तथा वच. म. 54 व वड़-11 औ अंत्य-2 के वचनामृतों पर सोचना।

ऐसी अलौकिक यात्रा में दिल्ली, छपैया और परोक्ष के स्थान भी देखने को मिलेंगे। वहाँ प्रगट के चरित्रों के, स्वभाव के–अहम् के मन, चित्त के–रागद्वेषात्मक स्वरूपों के मूर्तिमान दर्शन होंगे। तब हरेक सत्संगी गुणातीत ज्ञान को न भूलकर शब्दातीत, भावातीत और गुणातीत वर्ते व किसके साथ घूमते हैं इस बात का अखंड अनुसंधान रखकर धाम के ही महामुक्तों की सेवा जो मिली है, वह अलभ्य मौका माहात्म्य ज्ञान सहित असाधारण भक्ति का–सब कोई यात्रिक उठा लें और श्री छगनभाई, अंबालालभाई, बाबुभाई, खेंगारजीभाई, विनायकराव साहेब, सेठ श्री नारणभाई, झवेरभाई, कांतिलाल, मगनभाई, हरमानभाई, हकाखाचर, मणीभाई

सलाड़वाले, रणछोड़भाई भादरणवाले, भगवतसिंह जी—इन सभी को शांति से काम करने देकर सबको लाभ ही हो वैसे प्रवृत्ति कराते-कराते एक दूसरे का सहन करके, अपूर्व शांति व शिस्त रखकर प.पू. शास्त्रीजी महाराज के नाम की शोभा अपूर्व बढ़ायें तो यह महायात्रा सम्पूर्ण सफल हुई गिनी जाएगी। और जहाँ गुण की—भाव की—स्वभाव की—आदतों की, वृत्तियों के द्वंद्व खड़े होवें, वहाँ सत्संग दर्पण समान गिनकर, सभी खुद के अन्तर में टटोलकर दिव्यता कायम रखेंगे तो स्वामिश्रीजी अपार दिव्य सुख देंगे ही, इस बात का विश्वास रखना।

प्रगट की अपार महिमा का यह अनुसंधान रखकर खाते, सोते, सभा में, गाड़ी में, बातों में, नहाने में, सफाई में, शुद्ध होने में—देहाभिमान, स्वभाव, प्रकृति व मूल आदतों का ऊपर-ऊपर से क्षणिक भावावेश का प्रदर्शन ना हो वह सभी ध्यान रखना। स्वामिश्रीजी अपार दिव्यता प्रगटाकर सभी को अलौकिक सुख दें यही अभ्यर्थना। जो कोई यात्रा में आए हैं उसके भाग्य का पार ही नहीं। और उसका अक्षरधाम सुवर्णाक्षर से जीव में ही निश्चित लिखा गया ही है यूँ अवश्य माने और अनुभव करे व अखंडित रखे यही गुरुहरिश्री से नम्र प्रार्थना है। प.पू. शास्त्रीजी महाराज का प.पू. प्रमुखस्वामी को दिया वचन प्रगट गुरुहरि योगीजी महाराज ने पूरा करके, अलौकिक सुख सभी को देकर गुणातीत करते-करते अनेक कार्य पूर्ण कराएगें और स्मृतिरूप में जीवन के लिए आत्मा की खुराक देंगे और इसलिए समग्र सत्संगमंडल अफ्रिका मंडल वगैरे की ओर से सभी संतों का और पू. छगनभाई, हरमानभाई व मणिभाई सलाडवाले तथा भादरण, अमदावाद बकरीपोल मंडल का अनहद आभार प्रदर्शित करता है, जिससे जीवन संग्राम पूर्ण होकर जीवन यात्रा की सर्वोपरि पूर्णाहुति करवाने गुरुहरि सभी सत्संगी को प्रगट कथावार्ता प्रसंगों के रूप में अखंड स्मृति ज्ञान देकर धाम का सुख प्राप्त कराए। अन्तर की गहराई से विचारोगे तो सभी को ख्याल पड़ेगा कि कितनी संघनिष्ठा हॉसिल करी है और ऐसी अलौकिक दृष्टि बनाकर—मन जीतकर, विचरण करते हुए महायज्ञरूप कितना फलमयी जीवन परिवर्तन होता जाता है व स्वभाव एवं वासना कितनी जीती जाती है। सभी संप और धर्म से रहकर एकता रखकर अपूर्व सेवा से लाभान्वित हो यही नम्र प्रार्थना है। सभी को अलौकिक दिव्यदर्शन वचन व स्मृतिरूप में जीव में बस जाए और यात्रा का अपूर्व खुश खुशहाल अंत सत्संग की दिव्यता बनी रहने में ही हो ऐसा कृपादृष्टि की इच्छा रखते हैं। स्वामिनारायण सम्प्रदाय के इतिहास का नया पन्ना लिखा जा रहा है, कल्पवृक्षों समान महाफल थोड़े समय में ही सभी को प्रतीतरूप में दिखाई देंगे और यही साबित करेगा—सर्वोपरि स्वामी निष्ठा की जीवंतता और सनातन सत्यता !

—प.पू. काकाजी महाराज

दिसम्बर 1953

स्वामी की बातें

311. गुरु मिलने के बाद यदि शिष्य को गर्भवास वगैरा के दुःख का त्रास नहीं मिटा, तो वह गुरु ही नहीं। *प्र–5,46*

312. मनधारी भजन-भक्ति वगैरा करते हैं, उससे अन्तर में शांति नहीं होती, लेकिन भगवान और साधु के कहे मुताबिक करे तो शांति होती है। *प्र–5,47*

313. फिलहाल भगवान का खूब अनुग्रह है। वह क्या–कि जबरदस्ती भजन करवाते हैं, नियम पलवाते हैं और बातें सुनाते हैं। ऐसे साधु मिले हैं। *प्र–5,48*

314. यूँ समागम करते रहने से भगवान में लगाव होने पर या ज्ञान होने पर इस देह में से और लोक में से उखड़ पायेंगे। *प्र–5,49*

315. स्पर्श आदि उत्तम विषय पहले अच्छे लगते हैं, परन्तु फिर दुःख होता है। या ज्ञानी सुखी है या तो किसी का कहा माने वह सुखी है..... *प्र–5,50*

316. बहुत जीवों को मोक्ष के मार्ग पर ले आने हैं सो नियम धर्म की बात खूब हुआ करती है और माहात्म्य की बातें ज्यादा नहीं होती। महाराज ने माहात्म्य की खूब बातें करी जिससे कुपात्र जीवों ने धर्म छोड़ दिया। सो महाराज ने स्वयं ही माहात्म्य की बातों के ऊपर सेरे लगा दिए। वास्तव में तो माहात्म्य जानने से ही शांति है। पर, जीव की पात्रता नहीं सो माहात्म्य की बातें नहीं करते। *प्र–5,51*

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	26.9.93	रविवार	जलझीलनी एकादशी, निर्जला व्रत
2.	दि.	30.9.93	गुरुवार	पूर्णिमा
3.	दि.	1.10.93	शुक्रवार	श्राद्ध प्रारम्भ
4.	दि.	4.10.93	सोमवार	ब्रह्मस्वरूप गुरुहरि प.पू. शास्त्रीजी महाराज का श्राद्ध दिन
5.	दि.	10.10.93	रविवार	श्रीजी महाराज व ब्र.स्व.जागास्वामी का श्राद्ध दिन
6.	दि.	11.10.93	सोमवार	ब्र.स्व.गुरुहरि प.पू. योगीजी महाराज का श्राद्ध दिन
7.	दि.	12.10.93	मंगलवार	ब्र.स्व.प.पू. काकाजी महाराज का श्राद्ध दिन, एकादशी, व्रत
8.	दि.	13.10.93	बुधवार	मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी व ब्र.स्व.भगतजी महाराज का श्राद्ध दिन
9.	दि.	16.10.93	शनिवार	नवरात्रे प्रारम्भ
10.	दि.	24.10.93	रविवार	विजयादशमी, दशहरा, प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का पार्षदी दीक्षा दिन

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashok vihar-III, Swaminarayan Marg, Kakaji Lane,
Delhi-110 052. (India) Tel. : 7229327, 7249327
Printed at R.P. Printers, Shahdara, Delhi-110 032